ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 203-205

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

बिहार के स्थापत्य का धार्मिक दृष्टिकोण

1. अंकिता साहू
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-05.12.2023, Revised-11.12.2023, Accepted-17.12.2023 E-mail: ankitasahu512@gmail.com

सारांशः ***कला एवं वास्तुकला का इतिहास भी उतना ही प्राचीन है, जितना कि मानव सभ्यता का है। जैसे सभ्यताओं में परिवर्तन हुआ ठीक वैसे–वैसे ही वास्तुकला में परिवर्तन देखने को मिलता है। भारत में स्थापत्य कला का विकास प्रगैतिहासिक काल से 12वीं सदी तक निरंतर चलता आ रहा है। 13वीं सदी में वास्तुकला ने एक नई ऊंचाई ग्रहण की, भारत में सभी कलाओं का घनिष्ठ संबंध देखने को मिलता है। स्थापत्य कला में धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत के दर्शन होते हैं।***

कुंजीभूत शब्द– कला, वास्तुकला, मानव सभ्यता, स्थापत्य कला, प्रगैतिहासिक काल, घनिष्ठ, सांस्कृतिक विरासत, अतुल्यनीय।

बिहार एक प्राचीन राज्य है और इसकी प्राचीनता इसके नाम से स्पष्ट होती है, जो प्राचीन शब्द बिहार (मठ) से लिया गया है। बिहार मठो की भूमि रही है। यहा हिंदू, बौद्ध, जैन और मुस्लिम तीर्थ स्थल प्रचुर मात्रा में है। जहां भारत के पहले प्रमुख साम्राज्यों का उदय और पतन हुआ। सभी राज्य में बिहार बुद्ध के जीवन के सबसे अधिक निकटता से जुड़ा है, जिसके कारण यहां तीर्थ यात्रियों का मार्ग भी प्रशस्त हुआ है। बौद्ध पथ राजधानी शहर पटना से शुरू होता है जहां उल्लेखनीय संग्रह और बौद्ध मूर्तियां देखने को मिलती हैं।

बिहार की वास्तुकला– बिहार की वास्तुकला में हमें धर्मो का संगम देखने को मिलता है। बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और इस्लामी जैसे विभिन्न धार्मिक मान्यताओं से विविध प्रकार की वास्तुकला शैली का प्रदर्शन करती है। यहां वास्तुकला में मकबरे, बौद्ध स्तूप, और मंदिर शामिल हैं। बिहार की वास्तुकला में मौर्य, बौद्ध और मुगलों के स्थापत्य शैली का प्रतिनिधित्व देखने को मिलता है। बिहार की प्रसिद्ध वास्तुकला के उदाहरण– लोमश ऋषि गुफा, शेरशाह सूरी का मकबरा, महाबोधि मंदिर, नालंदा विश्वविद्यालय, विश्व शांति स्तूप केसरिया स्तूप।

लोमश ऋषि गुफा– पहाड़ों में स्थित कंदराओं को गुफा की संज्ञा दी जाती है। बहुधा इन गुफाओं का निर्माण प्राकृतिक रूप से होता है परंतु कुछ मानव निर्मित गुफाएं होती हैं और मानव निर्मित गुफाओं में लोमश ऋषि का नाम प्रसिद्ध है। यह गुफा बराबर और नागार्जुन की पहाड़ियों में जहानाबाद जिले में भारतीय राज्य के बिहार में स्थित है। चट्टानों को उकेर कर बनाई गई यह गुफा अतुल्यनीय है। यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्य साम्राज्य के अशोक काल में पवित्र वास्तुकला के रूप में बनाया गया था।

गुफा के प्रवेश द्वार की बनावट अर्द्ध चंद्राकार है यह चौत्य मेहराब या चंद्रशाला का सबसे पुराना अस्तित्व है। यह एक बौद्ध गुफा है जो चौत्य हाल के रूप में मानी जाती है।

इतिहास– लोमस ऋषि गुफा बौद्ध भिक्षुओं को सम्राट अशोक द्वारा दिया गया एक उपहार था। यह गुफा तीसरी शताब्दी में ग्रेनाइट पत्थरों को काटकर बनाई गई थी। इसके अलंकृत द्वार पर हाथी और अन्य रूपांकनों को उकेरा गया।

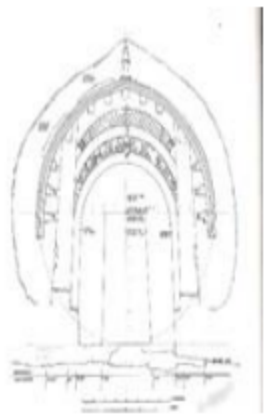

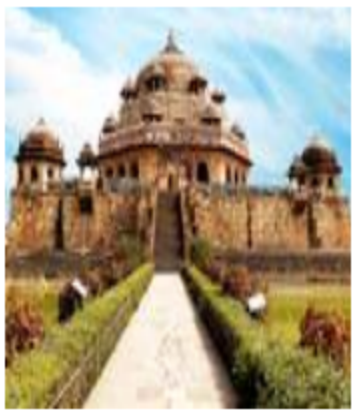

शेरशाह सूरी का मकबरा– भारत विविधता वाला देश है और विभिन्न प्रकार की संस्कृतिया भारत की खूबसूरती को दिखाती हैं। भारत देश में बहुतायत प्रसिद्ध मकबरें हैं साथ ही यह पर्यटकों के लिए पसंदीदा स्थल भी हैं। मुगलों द्वारा बनाए गए मकबरों में शेरशाह सूरी का मकबरा बहुत प्रसिद्ध है, शेरशाह सूरी एक पठान योद्धा था। शेरशाह सूरी ने लगभग 5 साल 1540–1545 तक शासन किया था और 1545 में उनकी मृत्यु हो गई थी। अपने शासन के दौरान ही उन्होंने बिहार के सासाराम में शेरशाह सूरी नाम से एक मकबरा बनवाया था। जिसका प्रमुख वास्तुकार अलीवाल खान था। इसे भारत का दूसरा ताजमहल भी माना जाता है। यह एक इंडो इस्लामी वास्तुकला का उदाहरण है, जो 122 फीट ऊंचा और बलुआ पत्थर से बना है। यह मानवीय निर्मित झील के बीच में स्थित है इस मकबरे का आकार अष्टकोणीय है। इस मकबरे को तीन मंजिली का आकार में बनाया गया है। मेहराबों पर कुरान की आयतें सुलेखित हैं। यह मकबरे में अंदर कब्र बनाए गए हैं, केंद्र में शासक के पिता हसन खान, सम्राट और 23 सेनापति के साथ स्थित हैं प्रत्येक कोने पर छतरियां बनाई गई हैं ।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

महाबोधि मंदिर– भारत के बिहार में स्थित बोधगया का मंदिर जहां भगवान बुद्ध ने ज्ञान की प्राप्ति की थी। 2002 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया। महाबोधि बिहार का निर्माण सम्राट अशोक द्वारा किया गया था। यह मंदिर तीसरी सदी में अशोक द्वारा बनवाने के बाद इसमें कई राजवंशों के राजाओं ने भी जीणोद्धार किया गया है। यह ईंटों से बना मंदिर अपनी वस्तुकला के लिए बहुत प्रसिद्ध है, इस मंदिर की ऊंचाई 180 फिट है।

मंदिर का निर्माण– इस मंदिर का प्रारंभ मौर्य वंश के दौरान शुरू हुआ और फिर इसका निर्माण निरंतर चलता रहा ।

कालक्रम – मौर्य काल – सम्राट अशोक ने एक मठ का निर्माण भी किया था जो वर्तमान में नहीं है। इस काल में हीरे का सिंहासन का निर्माण भी हुआ था।

मौर्यत्तर काल– इस काल में स्तंभों का निर्माण हुआ था और हीरे के सिंहासन के चारों ओर बर्तन के आकार के आधार और महाबोधि के चारों ओर रेलिंग एवं नक्काशीदार पैनल पदक बनाए गए थे।

गुप्तकाल– इस काल में रेलिंग को बढ़ाया गया था और मोटे कपड़ों से सजाया गया था इस रेलिंग को पत्तेदार आभूषणों और छोटी आकृतियों के साथ स्तूपों को बनाया गया था।

वर्तमान चरण– 13वीं शताब्दी के दौरान तुर्की आक्रमणकारी ने मंदिर पर हमला किया और बौद्ध धर्म अनुयायियों ने हार मान ली। इस मंदिर के पुनरुद्धार में सबसे पहले योगदान सर एडमिन अर्नाल्ड का था, जिन्होंने 1885 में "द लाइट ऑफ एशिया" लिखी थी। सर एडमिन ने महाबोधि मंदिर का दौरा किया और अंग्रेजो एवं भारत सरकार से निवेदन किया कि इस मंदिर को बौद्धों के संरक्षक में रखा जाए।

मंदिर का स्थापत्य– यह मंदिर ना ही पूर्ण रूप से नागर शैली में है और ना ही द्रविड़ क्योंकि इसमें दोनों शैली का समन्वय देखने को मिलता है यह नागर शैली मंदिरों की तरह संकीर्ण है, तो द्रविड़ मंदिर की तरह किसी मोड़ के ऊपर उठता दिखाई देता है मुख्य मंदिर पूर्व दिशा की ओर है जिसके दीवारों की ऊंचाई 11 मीटर है। महाबोधि मुख्य मंदिर में ऊपर शिखर पर अमलक और कलश दिखाया गया है मंदिर के चारों तरफ 2 मीटर ऊंची रेलिंग बनाई गई है। पुरानी रेलिंग पर सूर्य देवता को चार घोड़े द्वारा रथ खींचने का अंकन है और नई रेलिंग पर स्तूप एवं गरुड़ को दर्शाया गया है। मंदिर अशोक द्वारा बनाया गया था। परंतु इसके चारों ओर मठो का निर्माण अन्य राजाओं द्वारा किया गया था। गर्भ ग्रह में धातु की बनी 5 फीट की बुद्ध की मूर्ति स्थापित है। मंदिर के पश्चिम की तरफ बोधि वृक्ष है इस वृक्ष के नीचे बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद एक सप्ताह बिताया था।

नालंदा विश्वविद्यालय– मगध में एक संपन्न साम्राज्य हुआ करता था और मगध की राजधानी राजगृह थी। आजातशत्रु के शासनकाल में राजधानी पाटलिपुत्र में स्थापित हो गई, पाटलिपुत्र को वर्तमान में पटना कहा जाता है, और पटना से लगभग 88 किलोमीटर एवं राजगृह से 13 किलोमीटर दूरी पर बड़े गांव के पास नालंदा विश्वविद्यालय स्थित है। चीन, मंगोलिया, श्रीलंका, जापान तिब्बत, कोरिया आदि देशों के विद्यार्थी यहां पर पढ़ाई करते थे पांचवीं शताब्दी से लेकर 700 वर्षों तक यहां धर्म और दर्शन तथा अन्य विषयों का अध्ययन कराया जाता था। प्रसिद्ध चीनवासी व्हेन सॉन्ग ने भी यहां रहकर पढ़ाई की और लगभग 10,000 छात्र से लेकर 1500 आचार्य थे। जो यहां से शिक्षा प्राप्त करके विदेशों तक पहुंचाते थे । 2016 में इसको विश्व धरोहर सूची में भी शामिल किया गया।

नालंदा का अर्थ – नालंदा का अर्थ कमल होता है एवं नालंदा का अर्थ जिस स्थान पर ज्ञान देने का कोई अंत ना हो।

इतिहास– नालंदा का इतिहास पांचवी से छठी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है, यह समय भगवान बुद्ध और महावीर स्वामी का रहा और इनका इतिहास देखने को मिलता है। सम्राट अशोक ने नालंदा में मंदिर का निर्माण कराया था इसलिए नालंदा का निर्माण कुछ लोग अशोक द्वारा भी मानते हैं। राजा हर्षवर्धन ने नालंदा के विद्यार्थियों को बहुत योगदान दिया जिससे यहां धन की पूर्ति होती रही। नवी शताब्दी के प्रारंभ में नालंदा की अधिक उन्नति हुई इस उन्नति का श्रेय बंगाल के राजा देवपाल को दिया जाता है।

नालंदा का खंडहर में तब्दील होना– 1205 में नालंदा को नष्ट एक मुस्लिम आक्रमणकारी के हाथों हुआ मुस्लिम आक्रमक, ज्ञान– विज्ञान से मानवी चेतना एवं गैर मुस्लिम केंद्र को ध्वस्त कर इस्लाम का प्रचार प्रसार करना चाहते थे। बख्तियार खिलजी ने इस विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया था यहां की पुस्तकालय में लगभग 3 लाख से अधिक पुस्तक थी जब बख्तियार खिलजी ने यहां आग लगाई तो कुछ इतिहासकार कहते हैं कि 3 महीने तक यहां की किताबें आग में धधकती रही थी।

नालंदा विश्वविद्यालय की वास्तुकला – नालंदा विश्वविद्यालय वास्तुकला का नमूना था जो विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ था। इसमें हॉस्टल और कॉलेज थे जो एक लाइन में बने हुए थे यहां बुद्ध मंदिर भी बने थे। लेक्चर हॉल के चारों तरफ बरामदे होते थे तथा एक तरफ बाथरूम होता था रोशनदान और चबूतरा भी होता था।

वर्तमान स्थिति – नालंदा विश्वविद्यालय पूर्ण रूप से खंडहर में तब्दील हो चुका है आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पहले एशिया का

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था वर्तमान समय में या खंडहर काफी प्रसिद्ध है।

विश्व शांति– स्तूप विश्व शांति स्तूप बिहार राज्य के नालंदा जिले के राजगीर में स्थित है। राजगीर में पर्यटकों के लिए कई तीर्थ स्थल है परंतु विश्व शांति स्तूप अपना अलग महत्व रखता है। यह स्तूप रत्नागिरी पहाड़ी पर स्थित है जो लगभग 400 मीटर ऊंची है। विश्व शांति स्तूप का निर्माण जापान के बौद्ध धर्म को मानने वाले बौद्ध भिक्षु निशिदात्सु फूजी ने बनवाया था। सन 1965 में राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने इसका शिलान्यास किया था तथा 1969 में उद्घाटन राष्ट्रपति वीवी गिरी द्वारा किया गया था। विश्व शांति स्तूप राजगीर के अलावा अन्य जगहों पर भी बनाया गया है। जैसे– दिल्ली, नेपाल, लुंबिनी, सारनाथ, गया, पटना, वैशाली सभी स्तूप देखने में एक ही सामान लगते हैं। इस स्तूप का गुंबद 72 फीट ऊंचा है और व्यास 182 फिट है। विश्व शांति स्तूपों का माध्यम सफेद संगमरमर और गोलाकार है, जिसके चारों ओर चार मूर्तियां भी बनाई गई हैं। संगमरमर से बने इस स्तूप में बुद्ध की स्वर्ण की प्रतिमाएं हैं यह चारों प्रतिमाएं जीवन के चार चरणों को दिखाती हैं –जन्म, ज्ञान, उपदेश, मृत्यु।

यह स्तूप रत्नागिरी पहाड़ी पर स्थित होने के कारण यहां रोपवे से जाना पड़ता है एक रोपवे में कई कुर्सियां हैं। विश्व शांति स्तूप पर पहुंचने के लिए पैदल ट्रैक करके भी जा सकते हैं। इस स्तूप के चारों ओर प्रदक्षिणा पथ बने हैं, जिनसे सुंदर नजारा दिखता है। विश्व शांति स्तूप पटना से लगभग 100 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

केसरिया स्तूप– केसरिया स्तूप दुनिया का सबसे बड़ा स्तूप माना जाता है। 250 ईसा पूर्व अशोक ने इसका निर्माण करवाया था। यह स्तूप चंपारण जिले के केसरिया में स्थित है। इसकी ऊंचाई 400 फिट है इस स्तूप की खोज 1814 में कर्नाल मैकेंजी द्वारा की गई थी। 1861– 62 द्वारा कनिंघम ने इसकी खुदाई करवायी। इसकी ऊंचाई 104 फीट है, जबकि इंडोनेशिया स्थित विश्व प्रसिद्ध बोरोबुदुरदुर (जावा) स्तूप की ऊंचाई 103 फिट है। यह 6 तल्ले वाला है जिसके प्रत्येक खंड में बुद्ध की मूर्तियां स्थापित है। इस स्तूप में जो ईंटें लगी है वह मौर्य कालीन है।

निष्कर्ष– बिहार को भारत में संस्कृति, सभ्यता, इतिहास और ज्ञान – चिंतन के लिए जाना जाता है। एक समय ऐसा था जब कला, विवेक, शौर्य, संस्कृति, स्थापत्य सभी का केंद्र बिहार था। बिहार का स्थापत्य अत्यंत समृद्ध और वैभवशाली रहा है। बिहार की स्थापत्य की विशेषता में हिंदू, बौद्ध, इस्लाम तीनों धर्मो का संगम देखने को मिलता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, कर्म तेज, ''बोधगया का महाबोधि मंदिर एक ऐतिहासिक रूपरेखा'' पब्लिशर मोतीलाल बनारसी दास, दिल्लीं
2. सिंह, शंकर दयाल, ''बिहारः एक सांस्कृतिक वैभव'' डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा. लि., नई दिल्ली(1999).
3. भास्कर, विद्या, ''शेरशाह सूरी'' नेशनल ट्रस्ट बुक इंडियां
4. प्रसाद, पूनम, ''भारत का गुफा स्थापत्य'' प्रारब्ध प्रकाशन 185, नया मुंबई गंज,इलाहाबाद(2011).
5. सिंह, शंभू प्रसाद, ''विश्व सभ्यता को नालंदा की देंन'' बुद्धिस्ट वर्ड प्रेस (2015).
6. Hasmukh D. Sankalia, "The University of Nalanda" B.G. Paul & Co. Publisher, Madras (1934)-
7. Anurag deshpande, "Buddhist India Rediscovered" Jaico publishing house(2012)-
8. Ryojun sato, "The Mahabodhi Temple at Bodhagaya", Motilal Banarasidas publisher pvt. Lt.

Internet sources:

Alvitrips.com
https://tourism.bihar.gov.in
https://blogmedia.testbook.com
https://www.drishtiias.com

*****